गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार

सेवाव्रतोऽस्मि

हिंदी
विभागीय पत्रिका

इस विशाल क्षेत्र के प्रत्येक कोने में, चाहे शिक्षित हों या अशिक्षित, शहरी हों या ग्रामीण, सभी हिंदी भाषा को आसानी से समझ लेते हैं।

राजपाल

सत्र : 2024-25

जुलाई, 2025

हिन्दी विभागीय पत्रिका

हिंदी ... साहित्य... प्रौद्योगिकी...

हिंदी समृद्ध परम्परा की अगली कड़ी

वर्ष : 01 अंक 07 जुलाई 2025
आषाढ़ | विक्रम संवत-2082

संस्थापक सम्पादक

डॉ राजपाल

सहायक सम्पादक

डॉ राजेंद्र प्रसाद
शमशेर सिंह

छात्र सम्पादक

किरण रानोलिया
रिनू
राहुल, प्रियंका
संतोष

सम्पादकीय कार्यालय

हिंदी विभाग, गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय हिसार

9466370922, 9255451522, 9785775350

gchisarhindi@gmail.com
dr.rajhisari@gmail.com

एक नज़र

प्राचार्य संदेश
संपादकीय
गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

परिचय
प्रेमचंद- एक परिचय
देवकीनन्दन खत्री - एक परिचय

साहित्य प्रश्नोत्तरी
शब्द-सम्पदा
प्रशासनिक शब्दावली
गुरु-शिष्य परंपरा
पुस्तक समीक्षा

संदेश

आज गुरु पूर्णिमा का पावन पर्व हम सभी के लिए गुरु-शिष्य परंपरा की अमर महत्ता को स्मरण करने का अवसर लेकर आया है। यह दिन हमें उन सभी गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का संकल्प दिलाता है, जिन्होंने ज्ञान की अलख जगाकर हमारे जीवन को प्रकाशित किया है। वर्तमान में नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 हमारे लिए एक सुनहरा अवसर लेकर आई है, जो रटंत विद्या के स्थान पर कौशल विकास, व्यावहारिक ज्ञान और बहु-विषयक दृष्टिकोण पर बल देती है। यह प्रणाली छात्रों को रचनात्मक, आत्मनिर्भर और भविष्य के अनुरूप तैयार करने हेतु प्रेरित करती है। हमारा महाविद्यालय इस दिशा में निरंतर प्रयासरत है ताकि आप सभी वैश्विक चुनौतियों का सामना कर सकें। हमारे महाविद्यालय का उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम पूरा कराना नहीं, बल्कि छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। गुरु का कर्तव्य है कि वह शिष्य को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाए—यही हमारी शिक्षा-पद्धति का मूलमंत्र है। आप सभी छात्रों से मेरा अनुरोध है कि गुरु के प्रति सम्मान, सेवाभाव और सीखने की ललक को हमेशा बनाए रखें। इस पत्रिका के माध्यम से हमारे महाविद्यालय के प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों के विचारों को साझा करने का अवसर मिला है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका ज्ञान और रचनात्मकता का एक सशक्त माध्यम बनेगी।

आइए, गुरु पूर्णिमा के इस शुभ अवसर पर हम सभी ज्ञान, नैतिकता और सेवा के मार्ग पर अग्रसर होने का संकल्प लें।

"गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।"

प्राचार्य
डॉ विवेक कुमार सैनी

संपादकीय

गुरु परंपरा और नवीन शिक्षा नीति: ज्ञान की अविरल धारा

आषाढ़ मास की पूर्णिमा का यह पावन दिन हमारी सनातन गुरु-शिष्य परंपरा को समर्पित है। यह वह दिवस है जब हम उन विराट व्यक्तित्वों को नमन करते हैं, जिन्होंने ज्ञान की मशाल को पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रज्वलित रखा। आज जब हम नई शिक्षा नीति (NEP) 2020 के क्रांतिकारी स्वरूप को अपनाने की दिशा में अग्रसर हैं, तब गुरु की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। प्राचीन काल में गुरुकुलों में जहाँ शिष्य गुरु के सान्निध्य में जीवन मूल्य सीखते थे, वहीं आज नई शिक्षा नीति भी समग्र विकास पर बल देती है। यह नीति रटंत विद्या के स्थान पर रचनात्मकता, कौशल विकास और भारतीय ज्ञान परंपरा को समेटने का संकल्प लेकर आई है। गुरु का दायित्व अब केवल पाठ्यक्रम पढ़ाना नहीं, बल्कि छात्रों को जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार करना है। नई शिक्षा प्रणाली में प्रौद्योगिकी का समावेश और बहु-विषयक दृष्टिकोण गुरु-शिष्य संबंधों को नया आयाम दे रहा है। डिजिटल युग में भी गुरु की वही प्रासंगिकता है, क्योंकि मशीनें ज्ञान तो दे सकती हैं, पर मानवीय मूल्यों और चरित्र निर्माण का दीपक केवल गुरु ही प्रज्वलित कर सकते हैं। गुरु पूर्णिमा का यह अवसर हमें याद दिलाता है कि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल डिग्री अर्जित करना नहीं, बल्कि समाज के निर्माण में सार्थक योगदान देना है। आइए, हम गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए नवीन शिक्षा नीति के माध्यम से भारत को ज्ञान की विश्वगुरु पदवी पुनः दिलाने का संकल्प लें।

संपादक

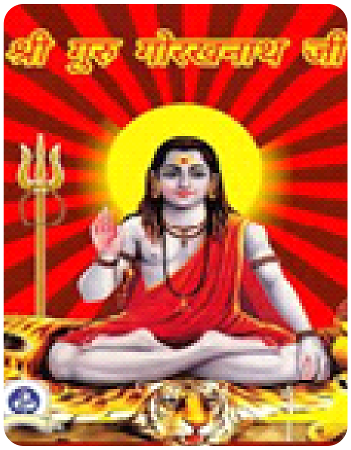

गोरखनाथ जी का जीवन दर्शन

योग और तंत्र दोनों ही क्षेत्र में गुरू को सर्वोपरि माना गया है। क्योंकि दोनों ही विद्यायें व्यावहारिक अधिक होती है। इस दृष्टि से गोरखनाथ का भी कोई न कोई गुरू अवश्य होना चाहिये। आज तक जो भी सामग्री प्राप्त हुई है। उस आधार पर मत्स्येंद्र नाथ ही गोरखनाथ के गुरू प्रमाणित होते है। 'योगिसम्प्रदायाविष्कृति' में जो दीक्षा परम्परा दी गई है उस आधार पर भी मत्स्येंद्र नाथ ही गोरखनाथ के गुरू है-- मत्स्येंद्र नाथ, गोरखनाथ, चर्पटनाथ, रेवणनाथ, गोपीचंद्र नाथ, कानिफानाथ, गहनिनाथ नागनाथ, भर्तृनाथ

गोरखवानी में गुरू की महत्ता पर पर्याप्त कहा गया है
साच का सबद सोना का रेख निगुरां कौ चाणक सगुरा कौ उपदेश गुर का मुंड्या गुंण मैं रहै। निगुरा भ्रम औगुण गहै।।'
अहंकारी व्यक्ति को गुरू की प्राप्ति नही हो सकती-
गुरू की बाचा षौजें नांहीं, अहंकारी अहंकार करै। षोजी जीवँ षोजि गुरू कौं, अहंकारी का प्यंड परै।।
आचार्य हजारी प्रसादी द्विवेदी ने गोरखनाथ और मस्त्येंद्र नाथ के विभिन्न सम्बन्धों को दर्शाया है और मत्स्येंद्रनाथ को गोरखनाथ का गुरू माना है। गोरखबानी और योगी सम्प्रदाय में गुरू मत्स्येंद्र नाथ का नाम मछन्दरनाथ से मिलता है। परंतु संस्कृत रचनाओं में प्रायः मत्स्येंद्रनाथ ही मिलता है। स्वर्गीय महमहोपाध्याय पं हरप्रसाद शास्त्री ने कौल ज्ञान निर्णय का समय अनुमानतः ईसवी सन की 9वीं शताब्दी बताया है। डॉ० प्रबोधचंद्र बागची ने मत्स्येद्रनाथ की लिखी अन्य चार पुस्तकों को प्रकाशन कराया जिनका समय उन्होने ईसवी सन् की ग्यारहवी शताब्दी का मध्य भाग बताया। इन पुस्तकों की पुष्पिका में मत्स्येंद्र नाथ का नाम कई प्रकार से लिखा गया है। जो इस प्रकार है-
कौल ज्ञान निर्णय में मच्छध्नपाद, मच्छेद्रपाद, मत्स्येंद्रपाद, और मीनपाद।
अकुल वीर तंत्र में - (ए) मीनपाद। (बी) मच्छेन्द्रपाद ।
कुलानंद में- मत्स्येंद्र ।
ज्ञानकारिका में- मच्छिंद्र नाथपाद।
इसी प्रकार विभिन्न तंत्र ग्रंथ, श्याम रहस्य और वर्णरत्नाकर में इनका नाम, मीन, मीनों, बताया गया है।' हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार मच्छंद्र, मछिन्द्र और मच्छेद आदि मत्स्येंद्र नाथ के अपभ्रंश रूप हो सकते है परतुं 'मच्छघ्न' शब्द मत्स्येंद्र का प्राकृत रूप नही हो सकता। इस नाम को सार्थक बताने के लिये हर प्रसाद शास्त्री जी कहते है कि मत्स्येंद्रनाथ मछली मारने वाली कैवर्त जाति में उत्पन्न हुये थे।'कौल ज्ञान निर्णय' में मत्स्येंद्र नाथ को ब्राह्मण बताया गया है। परंतु किसी कारणवश उनका नाम 'मत्स्यघ्न' पड़ गया। अधिकांश विद्वानों का मानना है कि मीन और मत्स्येंद्र एक ही है परंतु बंगीय परम्परा के अनुसार मत्स्येंद्र मीननाथ के पिता थे, तिब्बती परम्परा में बिल्कुल इसका उल्टा माना जाता है। वहाँ मीननाथ को मत्स्येंद्रनाथ का पिता माना जाता है।
श्रीमती कल्याणी मल्लिक ने तंत्रालोक भाष्य (1-24)
"भैरव्या भैरवात् प्राप्तं योगं व्याप्य ततः प्रिये।
तत्सकाशात्तु सिद्धेन मीन नाथेन वरानने ।। कामरूपे महापीठे मच्छेद्रेण महात्मना।।"
के आधार पर इन दोनों को एक बताया है।
'राजगुरू योगिवंश-कार के अनुसार मत्स्येंद्र नाथ का प्राचीनतम् समय 522 ई० तथा अर्वाचीनतम 10वीं शताब्दी है। प्रमाण यह कि नेपाल का दुर्भिक्ष, हडसन, के अनुसार लगभग 5वीं शताब्दी में पड़ा था। चीनी पर्यटक हुएन्त्सांग के अनुसार भावविवेक और मत्स्येंद्र नाथ समकालीन है। भावविवेक का समय 550 ई0 है।

लेवी का मानना है कि मत्स्येंद्र 657 ई० में नेपाल के राजा नरेंद्रदेव के निमंत्रण पर वहाँ गये थे। ज्ञानेश्वर की परम्परा के आधार पर अन्तिम समय 10वीं-11 वी शताब्दी तक है।
गोरखनाथ के गुरू मत्स्येंद्र नाथ के नाम के साथ-साथ अनेक विवादास्पद घटनायें है, जिनसे उनकी दीक्षा, साधना, जाति, जन्म, कुल आदि का निर्णय नही हो पाता किंतु प्राप्त सामग्री के अनुसार यह तो निश्चित है कि उनके गुरू मत्स्येंद्र नाथ के अनेक नाम थे, और उनकी जाति उच्च कोटि की थी, सम्भवतः ब्राह्मण।

गुरु गोरखनाथ के पद

अवधू बोल्या तत बिचारी, पृथ्वी मैं बंकवाली। अष्टकुल परबत जल बिन तिरिया, अद्भुद अचंभा भारी ॥ टेक ॥ मन पवन अगम उजियाला, रवि ससि तार गयाई। तीन राज त्रिविध कुल नाहीं, चारि जुग सिधि बाई ॥ पाँच सहस मैं षट् अपूठा, सप्त दीप अष्ट नारी। नव खण्ड पृथी इकबीस मांहीं, एकदसि एक तारी ॥ द्वादस त्रिकुटी यला पिंगुला, चवदसि चित मिलाई। षोडस कवल दल सील बतीसी, जुरा मरन भौ गमाई ॥ दसवें द्वार निरंजन उनमन बासा, सबदै पलटि समांनां । भणंत गोरखनाथ मछिंद्र नां पूता अविचल थीर रहांनां ॥

इस पद में तिथियों के बहाने तत्त्व ज्ञान का उपदेश किया गया है। अवधू ने कहा, शरीरं (पृथ्वी) में सुरति (बंकवाली) लगाकर तत्त्व (ब्रह्म) का चिन्तन किया तो ज्ञान हुआ कि यह शरीर (अष्टकुल पर्वत) माया (जल) रहित होकर भवसागर तर गया। यह अद्भुत आश्चर्य है। दो, मन और प्राण (पवन) में ब्रह्म (अगम) के ज्ञान का प्रकाश हुआ क्योंकि सूर्य और चन्द्र नाड़ियाँ सुषुम्ना (तार) में चली गईं। तीन, तदनन्तर सत्व, रज और तम गुणों का प्रभाव नहीं रहा। चार, प्राण व अपान का वायु पर संयम हो गया। पाँच, सहस्रार में जीव की स्थिति हो गई। छह, प्राणवायु विपरीत चल पड़ी। सात, ज्ञान का दीप जल उठा। आठ, कुण्डलिनी (नारी) शिव स्थान में पहुँच गई। नौ, शरीर का पृथ्वी भाग सूक्ष्म चक्र वाले मस्तिष्क (इकबीस ब्रह्माण्ड) में स्थापित हो गया। ग्यारह, फिर एकरस समाधि (तारी) लग गई। बारह, इडा और पिंगला नाड़ियाँ त्रिकुटी (ललाट) में, सुषुम्ना में समा गईं। चौदह, चित्त ब्रह्म में लीन हो गया। सोलह, षट्चक्र में संयम से सदाचार सम्बन्धी बत्तीस लक्षण प्राप्त हो गए और बुढापे व मृत्यु का भय नहीं रहा। इसके पश्चात् दसवें द्वार में विद्यमान ब्रह्म में जीव का वास हो गया। जीव पुनः ब्रह्म (सबदै) में समा गया। मच्छन्दर का पुत्र गोरख कहता है कि जीव अपने मूल में स्थिर हो गया।

पद में तेरह की गिनती का उल्लेख नहीं है। इसे अन्तिम चरण के साथ जोड़ सकते हैं। एकादश इन्द्रियों, अहं और बुद्धि इन तेरह को छोड़कर जीव अपने मूल में स्थिर हो जाता है।

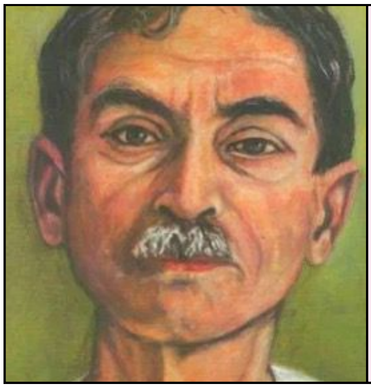

प्रेमचंद
एक परिचय

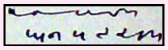

प्रेमचंद

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी जिले (उत्तर प्रदेश) के लमही गाँव में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनकी माता का नाम आनन्दी देवी तथा पिता का नाम मुंशी अजायबराय था जो लमही में डाकमुंशी थे। उनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। प्रेमचंद (प्रेमचन्द) की आरम्भिक शिक्षा फ़ारसी में हुई। प्रेमचंद के माता-पिता के सम्बन्ध में रामविलास शर्मा लिखते हैं कि- "जब वे सात साल के थे, तभी उनकी माता का स्वर्गवास हो गया। प्रेमचंद वेबैक मशीन जब पन्द्रह वर्ष के हुए तब उनका विवाह कर दिया गया और सोलह वर्ष के होने पर उनके पिता का भी देहान्त हो गया। परेमचंद शादी के फैसले पर पिता के बारे में लिखते हैं की “पिताजी ने जीवन के अंतिम वर्षों में एक ठोकर खाई और स्वंय तो गिरे ही, साथ में मुझे भी डुबो दिया और मेरी शादी बिना सोचे समझे करा दिया| इस बात की पुष्टि रामविलास शर्मा के इस कथन से होती है कि- "सौतेली माँ का व्यवहार, बचपन में शादी, पण्डे-पुरोहित का कर्मकाण्ड, किसानों और क्लर्कों का दुखी जीवन-यह सब प्रेमचंद ने सोलह साल की उम्र में ही देख लिया था। इसीलिए उनके ये अनुभव एक जबर्दस्त सचाई लिए हुए उनके कथा-साहित्य में झलक उठे थे।"[1] उनकी बचपन से ही पढ़ने में बहुत रुचि थी। 13 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने तिलिस्म-ए-होशरुबा पढ़ लिया और उन्होंने उर्दू के मशहूर रचनाकार रतननाथ 'शरसार', मिर्ज़ा हादी रुस्वा और मौलाना शरर के उपन्यासों से परिचय प्राप्त कर लिया[2]। उनका पहला विवाह पंद्रह साल की उम्र में हुआ। 1906 में उनका दूसरा विवाह शिवरानी देवी से हुआ जो बाल-विधवा थीं। वे सुशिक्षित महिला थीं जिन्होंने कुछ कहानियाँ और प्रेमचंद घर में शीर्षक पुस्तक भी लिखी। उनकी तीन सन्ताने हुईं-श्रीपत राय, अमृत राय और कमला देवी श्रीवास्तव। 1898 में मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक नियुक्त हो गए। नौकरी के साथ ही उन्होंने पढ़ाई जारी रखी। उनकी शिक्षा के सन्दर्भ में रामविलास शर्मा लिखते हैं कि- "1910 में अंग्रेज़ी, दर्शन, फ़ारसी और इतिहास लेकर इण्टर किया और 1919 में अंग्रेजी, फ़ारसी और इतिहास लेकर बी. ए. किया।"[3] १९१९ में बी.ए.[4] पास करने के बाद वे शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हुए।

1921 ई. में असहयोग आन्दोलन के दौरान महात्मा गाँधी के सरकारी नौकरी छोड़ने के आह्वान पर स्कूल इंस्पेक्टर पद से 23 जून को त्यागपत्र दे दिया। इसके बाद उन्होंने लेखन को अपना व्यवसाय बना लिया। मर्यादा, माधुरी आदि पत्रिकाओं में वे संपादक पद पर कार्यरत रहे। इसी दौरान उन्होंने प्रवासीलाल के साथ मिलकर सरस्वती प्रेस भी खरीदा तथा हंस और जागरण निकाला। प्रेस उनके लिए व्यावसायिक रूप से लाभप्रद सिद्ध नहीं हुआ। 1933 ई. में अपने ऋण को पटाने के लिए उन्होंने मोहनलाल भवनानी के सिनेटोन कम्पनी में कहानी लेखक के रूप में काम करने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। फिल्म नगरी प्रेमचंद को रास नहीं आई। वे एक वर्ष का अनुबन्ध भी पूरा नहीं कर सके और दो महीने का वेतन छोड़कर बनारस लौट आए। उनका स्वास्थ्य निरन्तर बिगड़ता गया। लम्बी बीमारी के बाद 8 अक्टूबर 1936 को उनका निधन हो गया।[5]

साहित्यिक जीवन

प्रेमचंद (प्रेमचन्द) के साहित्यिक जीवन का आरंभ (आरम्भ) 1901 से हो चुका था[6] आरंभ (आरम्भ) में वे नवाब राय के नाम से उर्दू में लिखते थे। प्रेमचंद की पहली रचना के संबंध में रामविलास शर्मा लिखते हैं कि- "प्रेमचंद की पहली रचना, जो अप्रकाशित ही रही, शायद उनका वह नाटक था जो उन्होंने अपने मामा जी के प्रेम और उस प्रेम के फलस्वरूप चमारों द्वारा उनकी पिटाई पर लिखा था।

इसका जिक्र उन्होंने ‘पहली रचना’ नाम के अपने लेख में किया है।"[7] उनका पहला उपलब्ध लेखन उर्दू उपन्यास 'असरारे मआबिद'[8] है जो धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ। इसका हिंदी रूपांतरण देवस्थान रहस्य नाम से हुआ। प्रेमचंद का दूसरा उपन्यास 'हमखुर्मा व हमसवाब' है जिसका हिंदी रूपांतरण 'प्रेमा' नाम से १९०७ में प्रकाशित हुआ। १९०८ ई. में उनका पहला कहानी संग्रह सोज़े-वतन प्रकाशित हुआ। देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत इस संग्रह को अंग्रेज़ सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया और इसकी सभी प्रतियाँ जब्त कर लीं और इसके लेखक नवाब राय को भविष्य में लेखन न करने की चेतावनी दी। इसके कारण उन्हें नाम बदलकर प्रेमचंद के नाम से लिखना पड़ा। उनका यह नाम दयानारायन निगम ने रखा था।[9] 'प्रेमचंद' नाम से उनकी पहली कहानी बड़े घर की बेटी ज़माना पत्रिका के दिसम्बर १९१० के अंक में प्रकाशित हुई। १९१५ ई. में उस समय की प्रसिद्ध हिंदी मासिक पत्रिका सरस्वती के दिसम्बर अंक में पहली बार उनकी कहानी सौत नाम से प्रकाशित हुई।[10] १९१८ ई. में उनका पहला हिंदी उपन्यास सेवासदन प्रकाशित हुआ। इसकी अत्यधिक लोकप्रियता ने प्रेमचंद को उर्दू से हिंदी का कथाकार बना दिया। हालाँकि उनकी लगभग सभी रचनाएँ हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित होती रहीं। उन्होंने लगभग ३०० कहानियाँ तथा डेढ़ दर्जन उपन्यास लिखे। १९२१ में असहयोग आंदोलन के दौरान सरकारी नौकरी से त्यागपत्र देने के बाद वे पूरी तरह साहित्य सृजन में लग गए। उन्होंने कुछ महीने मर्यादा नामक पत्रिका का संपादन किया। इसके बाद उन्होंने लगभग छह वर्षों तक हिंदी पत्रिका माधुरी का संपादन किया। १९२२ में उन्होंने बेदखली की समस्या पर आधारित प्रेमाश्रम उपन्यास प्रकाशित किया। १९२५ ई. में उन्होंने रंगभूमि नामक वृहद उपन्यास लिखा, जिसके लिए उन्हें मंगलप्रसाद पारितोषिक भी मिला। १९२६-२७ ई. के दौरान उन्होंने महादेवी वर्मा द्वारा संपादित हिंदी मासिक पत्रिका चाँद के लिए धारावाहिक उपन्यास के रूप में निर्मला की रचना की। इसके बाद उन्होंने कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि और गोदान की रचना की। उन्होंने १९३० में बनारस से अपना मासिक पत्रिका हंस का प्रकाशन शुरू किया। १९३२ ई. में उन्होंने हिंदी साप्ताहिक पत्र जागरण का प्रकाशन आरंभ किया। उन्होंने लखनऊ में १९३६ में अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के सम्मेलन की अध्यक्षता की। उन्होंने मोहन दयाराम भवनानी की अजंता सिनेटोन कंपनी में कथा-लेखक की नौकरी भी की। १९३४ में प्रदर्शित फिल्म मजदूर की कहानी उन्होंने ही लिखी थी। १९२०-३६ तक प्रेमचंद लगभग दस या अधिक कहानी प्रतिवर्ष लिखते रहे। मरणोपरांत उनकी कहानियाँ "मानसरोवर" नाम से ८ खंडों में प्रकाशित हुईं। उपन्यास और कहानी के अतिरिक्त वैचारिक निबंध, संपादकीय, पत्र के रूप में भी उनका विपुल लेखन उपलब्ध है।

विशेषताएँ

बी.बी.सी. हिंदी में प्रकाशित विनोद वर्मा के साथ हुए साक्षात्कार रचना दृष्टि की प्रासंगिकता-मन्नू भंडारी में मन्नू भंडारी प्रेमचंद के विषय में बताती हैं कि-"साहित्य के प्रति और साहित्य के हर दृष्टि के प्रति यानी चाहे राजनीतिक, सामाजिक, पारिवारिक सभी को उन्होंने जिस तरह अपनी रचनाओं में समेटा और खासकरके एक आम आदमी को, एक किसान को, एक आम दलित वर्ग के लोगों को वह अपने आप में एक उदाहरण था. साहित्य में दलित विमर्श की शुरुआत शायद प्रेमचंद की रचनाओं से हुई थी."

विचारधारा

प्रेमचंद साहित्य की वैचारिक यात्रा आदर्श से यथार्थ की ओर उन्मुख है। सेवासदन के दौर में वे यथार्थवादी समस्याओं को चित्रित तो कर रहे थे लेकिन उसका एक आदर्श समाधान भी निकाल रहे थे। १९३६ तक आते-आते महाजनी सभ्यता, गोदान और कफ़न जैसी रचनाएँ अधिक यथार्थपरक हो गईं, किंतु उसमें समाधान नहीं सुझाया गया। अपनी विचारधारा को प्रेमचंद ने आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कहा है। इसके साथ ही प्रेमचंद स्वाधीनता संग्राम के सबसे बड़े कथाकार हैं। इस अर्थ में उन्हें राष्ट्रवादी भी कहा जा सकता है। प्रेमचंद मानवतावादी भी थे और मार्क्सवादी भी। प्रगतिवादी विचारधारा उन्हें प्रेमाश्रम के दौर से ही आकर्षित कर रही थी। प्रेमचंद ने १९३६ में उन्होंने प्रगतिशील लेखक संघ के पहले सम्मेलन को सभापति के रूप में संबोधन किया था। उनका यही भाषण प्रगतिशील आंदोलन के घोषणा पत्र का आधार बना।[21] इस अर्थ में प्रेमचंद निश्चित रूप से हिंदी के पहले प्रगतिशील लेखक कहे जा सकते हैं।

स्मृतियाँ

प्रेमचंद की स्मृति में भारतीय डाकतार विभाग की ओर से ३० जुलाई १९८० को उनकी जन्मशती के अवसर पर ३० पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया गया।[27] गोरखपुर के जिस स्कूल में वे शिक्षक थे, वहाँ प्रेमचंद साहित्य संस्थान की स्थापना की गई है। प्रेमचंद की १२५वीं सालगिरह पर सरकार की ओर से घोषणा की गई कि वाराणसी से लगे इस गाँव में प्रेमचंद के नाम पर एक स्मारक तथा शोध एवं अध्ययन संस्थान बनाया जाएगा।

प्रेमचंद संबंधी रचनाएँ

जीवनी

प्रेमचंद की तीन जीवनीपरक पुस्तकें सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं:

प्रेमचंद घर में- १९४४ ई. में प्रकाशित यह पुस्तक प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी द्वारा लिखी गई है जिसमें उनके व्यक्तित्व के घरेलू पक्ष को उजागर किया है। २००५ ई. में प्रेमचंद के नाती प्रबोध कुमार ने इस पुस्तक तो दोबारा संशोधित करके प्रकाशित कराया।

प्रेमचंद कलम का सिपाही- १९६२ ई. में प्रकाशित प्रेमचंद के पुत्र अमृतराय द्वारा लिखी गई यह प्रेमचंद वृहद जीवनी है जिसे प्रामाणिक बनाने के लिए उन्होंने प्रेमचंद के पत्रों का बहुत उपयोग किया है।

कलम का मज़दूर:प्रेमचन्द- १९६४ ई. में प्रकाशित इस कृति की भूमिका रामविलास शर्मा के अनुसार-"29 मई, 1962"[24] में लिखी गई थी किंतु उसका प्रकाशन बाद में किया गया था। मदन गोपाल द्वारा रचित यह जीवनी मूलत: अंग्रेजी में लिखी गई थी जिसका बाद में हिंदी रूपांतरण भी प्रकाशित हुआ। यह प्रेमचंद के परिवार के बाहर के व्यक्ति द्वारा रचित जीवनी है जो प्रेमचंद संबंधी तथ्यों का अधिक तटस्थ रूप से मूल्यांकन करती है।

कम्प्यूटर विषयक

1. Algorithm – एल्गोरिद्म / गणना विधि
2. Artificial Intelligence (AI) – कृत्रिम बुद्धिमत्ता
3. Cloud Computing – क्लाउड कंप्यूटिंग / बादल संगणना
4. Cybersecurity – साइबर सुरक्षा
5. Database – डाटाबेस / आँकड़ा भंडार
6. Encryption – एन्क्रिप्शन / गोपनीयकरण
7. Firewall – फायरवॉल / सुरक्षा दीवार
8. Big Data – बिग डाटा / विशाल आँकड़े
9. Blockchain – ब्लॉकचेन / खंड-श्रंखला
10. Data Mining – डाटा माइनिंग / आँकड़ा उत्खनन
11. Cloud Storage – क्लाउड स्टोरेज / बादल भंडारण
12. Digital Signature – डिजिटल हस्ताक्षर / ई-हस्ताक्षर
13. E-Governance – ई-शासन / इलेक्ट्रॉनिक शासन
14. Virtual Reality (VR) – आभासी वास्तविकता
15. Augmented Reality (AR) – संवर्धित वास्तविकता
16. Machine Learning – मशीन लर्निंग / यंत्र अधिगम
17. Meta Data – मेटाडाटा / उप-आँकड़े
18. Operating System (OS) – परिचालन तंत्र
19. Quantum Computing – क्वांटम कंप्यूटिंग
20. Web Hosting – वेब होस्टिंग / जालपृष्ठ मेज़बानी

आलोचनात्मक पुस्तकें

रामविलास शर्मा ने प्रेमचंद और उनका युग में प्रेमचंद के जीवन तथा उनके साहित्य का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया है। प्रेमचंद पर हुए नए अध्ययनों में कमलकिशोर गोयनका और डॉ॰ धर्मवीर का नाम उल्लेखनीय है। कमलकिशोर गोयनका ने प्रेमचंद का अप्राप्य साहित्य (दो भाग) व 'प्रेमचंद विश्वकोश' (दो भाग) का संपादन भी किया है। डॉ॰ धर्मवीर ने दलित दृष्टि से प्रेमचंद साहित्य का मूलयांकन करते हुए प्रेमचंद : सामंत का मुंशी व प्रेमचंद की नीली आँखें नाम से पुस्तकें लिखी हैं।

प्रेमचंद और सिनेमा

प्रेमचंद हिन्दी सिनेमा के सबसे अधिक लोकप्रिय साहित्यकारों में से हैं। सत्यजित राय ने उनकी दो कहानियों पर यादगार फ़िल्में बनाईं। १९७७ में शतरंज के खिलाड़ी और १९८१ में सद्गति। उनके देहांत के दो वर्षों बाद सुब्रमण्यम ने १९३८ में सेवासदन उपन्यास पर फ़िल्म बनाई जिसमें सुब्बालक्ष्मी ने मुख्य भूमिका निभाई थी। १९७७ में मृणाल सेन ने प्रेमचंद की कहानी कफ़न पर आधारित ओका ऊरी कथा[25] नाम से एक तेलुगू फ़िल्म बनाई, जिसको सर्वश्रेष्ठ तेलुगू फ़िल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। १९६३ में गोदान और १९६६ में गबन उपन्यास पर लोकप्रिय फ़िल्में बनीं। १९८० में उनके उपन्यास पर बना टीवी धारावाहिक निर्मला भी बहुत लोकप्रिय हुआ था।

विवाद

प्रेमचंद के अध्येता कमलकिशोर गोयनका ने अपनी पुस्तक 'प्रेमचंद : अध्ययन की नई दिशाएं' में प्रेमचंद के जीवन पर कुछ आरोप लगाए हैं। जैसे- प्रेमचंद ने अपनी पहली पत्नी को बिना वजह छोड़ा और दूसरे विवाह के बाद भी उनके अन्य किसी महिला से संबंध रहे (जैसा कि शिवरानी देवी ने 'प्रेमचंद घर में' में उद्धृत किया है), प्रेमचंद ने 'जागरण विवाद' में विनोदशंकर व्यास के साथ धोखा किया, प्रेमचंद ने अपनी प्रेस के वरिष्ठ कर्मचारी प्रवासीलाल वर्मा के साथ धोखाधडी की, प्रेमचंद की प्रेस में मजदूरों ने हड़ताल की, प्रेमचंद ने अपनी बेटी के बीमार होने पर झाड़-फूंक का सहारा लिया आदि।
"हंस" के संपादक प्रेमचंद तथा कन्हैयालाल मुंशी थे। परन्तु कालांतर में पाठकों ने 'मुंशी' तथा 'प्रेमचंद' को एक समझ लिया और 'प्रेमचंद'- 'मुंशी प्रेमचंद' बन गए।

प्रियंका

1. SUSHMA - 01-07-2002
2. ROSHNI - 14-07-2002
3. ANIL ALIAS ANIKSHIT - 17-07-1997
4. PRATIBHA - 17-07-2002
5. POOJA - 07-07-2000
6. NIKITA - 28-07-2003
7. Ritu = 1/7/2002
8. Priti = 2/7/2002
9. Meenaxi = 2/7/2002
10. Asha Rani = 8/7/2001
11. VijayKumar = 23/7/2002
12. Sarita = 27/7/2003

साहित्य प्रश्नोत्तरी

1. 'अंजन मांहि निरंजन भेढ्या, तिल मुख भेट्या तेलं। मूरति मांहि अमूरति परस्या, भया निरंतरि खेलं ।। - पंक्तियाँ किसकी हैं? - गोरखनाथ
2. गोरखपंथ के प्रमुख संस्कृत ग्रंथ- सिद्ध-सिद्धांतपद्धति, विवेक मार्तंड, शक्ति- संगम-तंत्र, निरंजन पुराण, वैराट पुराण।
3. नाथ साहित्य के आरंभकर्ता माने जाते हैं? - गोरखनाथ
4. किस पंथ को योगमार्ग, योग-संप्रदाय, अवधूत मत भी कहा गया है? - नाथपंथ
5. "शंकराचार्य के बाद इतना प्रभावशाली और इतना महिमान्वित भारतवर्ष में दूसरा नहीं हुआ। भारतवर्ष के कोने-कोने में उनके अनुयायी आज भी पाये जाते हैं भक्ति आंदोलन के पूर्व सबसे शक्तिशाली धार्मिक-आंदोलन गोरखनाथ का भक्तिमार्ग ही था। गोरखनाथ अपने युग के सबसे बड़े नेता थे।" - पंक्तियाँ किसकी हैं? - हजारी प्रसाद द्विवेदी
6. सिद्ध-मत और नाथ-पंथ में प्रमुख अंतर है-- सिद्ध निरीश्वरवादी थे नाथ ईश्वरवादी। - सिद्ध नारी भोग में विश्वास करते थे, किंतु नाथपंथी उसके विरोधी थे।
7. नाथपंथियों के ईश्वरवाद का वैशिष्टय है- निर्गुण की साधना
8. हठयोग, गुरु महिमा एवं पिंड ब्रह्मांडवाद किस साहित्य का वैशिष्ट्य है? -नाथ साहित्य
9. गोरखनाथ को हिंदी का प्रथम गद्य लेखक किसने माना है? - मिश्र बंधुओं ने
10. गोरखबानी की भाषा थी? - खड़ी बोली मिश्रित राजस्थानी
11. आचार्य शुक्ल ने नाथपंथियों की भाषा को कहा है? - सधुक्कड़ी (जिसका ढाँच कुछ खड़ी बोली लिए राजस्थानी था)
12. 'नाथ बोलै अमृतबांणी। बरिषैगी कंवली पांणी।। गाड़ि पडरवा बांधिलै खूँटा। चलै दमामा वजिले ऊँटा।। - पंक्तियाँ किसकी हैं? - गोरखनाथ

किरण रानोलिया

शब्द-युग्म
(समान-सा उच्चारण किंतु भिन्न अर्थवाले शब्द)

प्रत्येक भाषा में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिए हुए होते हैं किंतु थोड़ी-सी भिन्नता से भी उनके अर्थ नितांत अलग-अलग होते हैं। इस प्रकार के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन की समानता-असमानता और अर्थ-भिन्नता के प्रति विशेष जागरूकता नहीं दिखाई जाए तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है। इसलिए भाषा की शुद्धता की दृष्टि से इस प्रकार के शब्दों की विशेष जानकारी आवश्यक है। शब्द का अर्थ मूलतः उसके प्रयोग में निहित रहता है, अतः परीक्षा में भी शब्द के अर्थ को वाक्य में प्रयोग भगों करके स्पष्ट करना चाहिए।

शब्द	अर्थ
अविधि	क़ानून विरुद्ध
अभिराम	सुंदर
अविराम	बिना रुके, निरन्तर
अभिनय	नाटक कर्म
अविनय	धृष्टता
अंधकारि	महादेव
अंधकारी	भैरव राग
अन्न	अनाज
अन्य	दूसरा

हांसी के डॉ. योगी अनूप नाथ को नेपाल में अंतर्राष्ट्रीय योग सम्मेलन 2025 का मिला निमंत्रण, अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का गौरव

हांसी, 9 अगस्त (संजय भुटानी): भारत की योगिक परंपरा और नाथ संप्रदाय की वैदिक चेतना को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित करते हुए अखिल भारतवर्षीय जोगीनाथ महासभा के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. योगी अनूप नाथ को नेपाल सरकार एवं नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग सम्मेलन-2025 में आमंत्रित किया गया है।

डॉ. योगी अनूप नाथ।

यह प्रतिष्ठित ग्लोबल योग समिट आगामी 11 से 13 अक्तूबर 2025 तक नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय में आयोजित होगी। सम्मेलन का आयोजन नेपाल महर्षि वैदिक फाऊंडेशन, पतंजलि योग समिति लुंबिनी प्रांत और नेपाल के विभिन्न आध्यात्मिक, शैक्षणिक एवं सामाजिक संगठनों के सहयोग से हो रहा है। कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में नेपाल के प्रधानमंत्री तथा नेपाल संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति के. पी.शर्मा ओली की गरिमामयी उपस्थिति प्रस्तावित है। योग, अध्यात्म और नाथ परंपरा की वैश्विक प्रतिध्वनि करते हुए इस सम्मेलन में विश्वभर से विशिष्ट योगाचार्य, शोधकर्त्ता, संन्यासी, शिक्षाविद और नीति निर्माता भाग लेंगे। सम्मेलन का उद्देश्य योग, अध्यात्म, शोध, शिक्षा एवं ध्यान के क्षेत्र में परंपरा और आधुनिकता के संगम से मानव कल्याण हेतु ठोस मार्ग खोजना है।

नेपाल जैसे पवित्र राष्ट्र, जहां पशुपतिनाथ, सिद्ध मत्स्येन्द्रनाथ, गुरु गोरखनाथ, योगी नरहरिनाथ और राजर्षि जनक जैसे दिव्य मनीषियों ने साधना की, वहां इस प्रकार का योग सम्मेलन होना एक ऐतिहासिक पहल है। नाथ संप्रदाय के विद्वान, संत और राष्ट्र सेवक के रूप में प्रतिष्ठित डॉ. योगी अनूप नाथ ने कहा कि उनका चयन इस सम्मेलन के लिए भारत के गौरव को वैश्विक पटल पर पुष्ट करता है। वे अपने साथ नाथ योग की सिद्ध परंपरा, 84 सिद्धों का ज्ञान और भारतीय दर्शन की मौलिक ऊर्जा को इस मंच पर लेकर जाएंगे। सम्मेलन में वे गुरु गोरखनाथ, सिद्ध योग और विश्व कल्याण में योग की भूमिका विषय पर अपना विशेष व्याख्यान देंगे।

नेपाल और भारत के योग-बंधन को नई गति देते हुए यह आयोजन न केवल योग परंपरा का उत्सव है, बल्कि भारत-नेपाल की सांस्कृतिक एकता, गोरखनाथ पीठ और गोरखा राज्य की ऐतिहासिक कड़ी और हिमालय की ज्ञानपरंपरा का पुनः जागरण है। डॉ.योगी अनूप नाथ ने इस निमंत्रण को भारत की परंपरा और गुरु परंपरा के सम्मान के रूप में स्वीकार करते हुए आभार प्रकट किया है। उन्होंने कहा कि नेपाल गोरक्षनाथ की भूमि है और यह योग सम्मेलन गुरु परंपरा को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित करने का एक अवसर है। यह केवल सम्मेलन नहीं, बल्कि योग संस्कारों की जागरण यात्रा है।

प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेज़ी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए।

Executive = कार्यपालिका/प्रबंधक अधिशासी

Exempt = छूट देना

Exercise = प्रयोग करना

Ex-gratia payment = अनुग्रहपूर्वक अदायगी

Exhaustive note = "सर्वतः पूर्ण टिप्पणी:

Exigency = अत्यावश्यकता

Exit निर्गम/निकास द्वार

Ex-officio = पदेन

Exonerate = दोषमुक्त करना

Exparte = एकपक्षीय

Expediency = समीचीन/कालोचित

Expedite = शीघ्र कार्यवाही करना

Expel = निष्कासित करना

Expire = समाप्त होना/देहावसान होना

Explusion = व्याख्यात्मक, विवरणात्मक

Extend = बढ़ाना/लागू होना

Extensive व्यापक

Extract = उद्धरण

Face Value = अंकित मूल्य

Facsimile = अनुलिपि/प्रतिकृति

Fair Copy = स्वच्छ प्रति

Favourable Consideration = अनुकूल विचार

Fictitious = काल्पनिक

Figures = आँकड़े

Finance = वित्त/रुपया लगाना

Finding = निष्कर्ष

Fire Extinguisher = दमकल

First instance = प्रथमतः

Fiscal = राजस्व संबंधी

Fixation = स्थिरीकरण

गुरु गोरखनाथ की गुरु-शिष्य परंपरा: ज्ञान, तप और शक्ति का अद्भुत संगम

गुरु गोरखनाथ की गुरु-शिष्य परंपरा: ज्ञान, तप और शक्ति का अद्भुत संगम

भारतीय सनातन परंपरा में गुरु गोरखनाथ का नाम एक ऐसे योगी-सिद्ध के रूप में उभरता है, जिन्होंने नाथ परंपरा को एक नई दिशा दी। उनकी गुरु-शिष्य परंपरा न केवल आध्यात्मिक ज्ञान का प्रवाह थी, बल्कि यह सामाजिक क्रांति और योग-साधना का भी मार्ग प्रशस्त करती थी।

गुरु गोरखनाथ और उनकी शिक्षा पद्धति

1. गुरुकुल शैली:
   - गुरु गोरखनाथ ने हिमालय की गुफाओं और आश्रमों में योग, तंत्र और अध्यात्म की शिक्षा दी।
   - शिष्यों को कठोर साधना, ब्रह्मचर्य और लौकिक ज्ञान का समन्वय सिखाया जाता था।
2. शिष्यों का चयन:
   - वे केवल उन्हें ही शिष्य बनाते थे, जिनमें तपस्या और सेवाभाव की प्रबल इच्छा होती थी।
   - प्रसिद्ध शिष्यों में मछंदरनाथ, चौरंगीनाथ और भर्तृहरि शामिल हैं।
3. ज्ञान का हस्तांतरण:
   - गुरु गोरखनाथ ने "सबद" (आध्यात्मिक वाणी) और "योग-क्रियाओं" के माध्यम से शिष्यों को दीक्षित किया।
   - उनकी शिक्षाएँ "गोरख बानी" में संकलित हैं, जो जीवन के गूढ़ रहस्यों को उजागर करती हैं।

गुरु-शिष्य परंपरा की विशेषताएँ

✓ तपस्या पर बल: शिष्यों को शारीरिक व मानसिक कठिनाइयों को सहने की शक्ति दी जाती थी।
✓ समाज सुधार: नाथ योगियों ने जाति-पाति के भेद से ऊपर उठकर समरसता का संदेश दिया।
✓ रहस्यमय दीक्षा: गुरु मंत्र, योगिक क्रियाएँ और गुप्त ज्ञान का हस्तांतरण।

आधुनिक युग में प्रासंगिकता

- आज भी गोरखनाथ मठ और नाथ संप्रदाय उनकी परंपरा को जीवित रखे हुए हैं।
- नई शिक्षा नीति (NEP) में योग और भारतीय ज्ञान परंपरा को सम्मिलित करने की दिशा में यह प्रेरणा देती है।

गुरु गोरखनाथ की वाणी:

'जो खोजा तिन पाया, गहरे पानी पैठ।
मैं बपुरा बूडन डरा, रहा किनारे बैठ।'

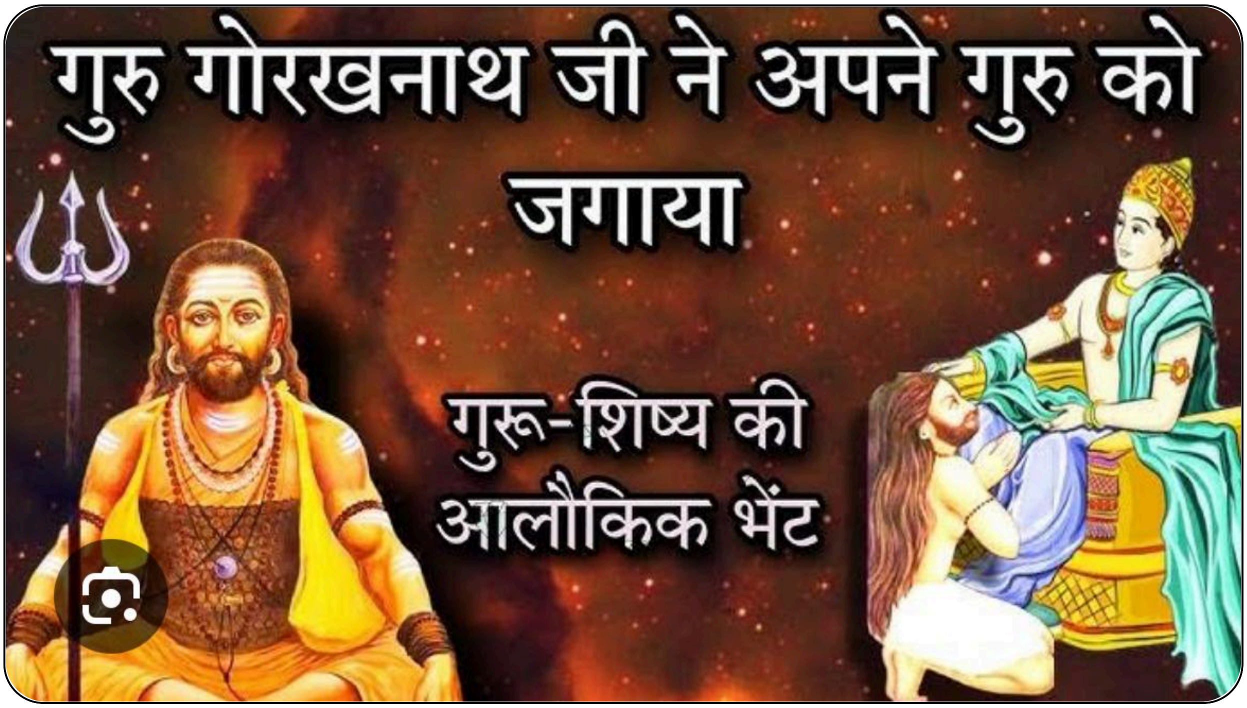
गुरु गोरखनाथ जी ने अपने गुरु को जगाया
गुरू-शिष्य की आलौकिक भेंट

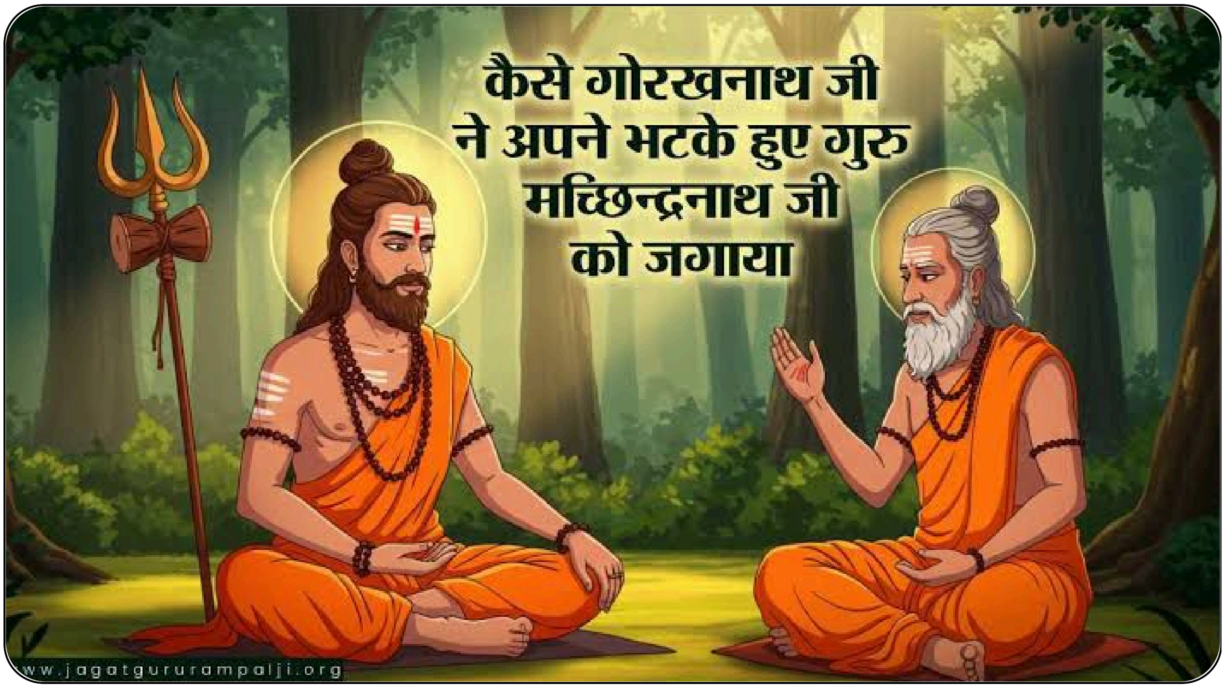
कैसे गोरखनाथ जी ने अपने भटके हुए गुरु मच्छिन्द्रनाथ जी को जगाया
ww.jagatgururampalji.org

पुस्तक समीक्षा

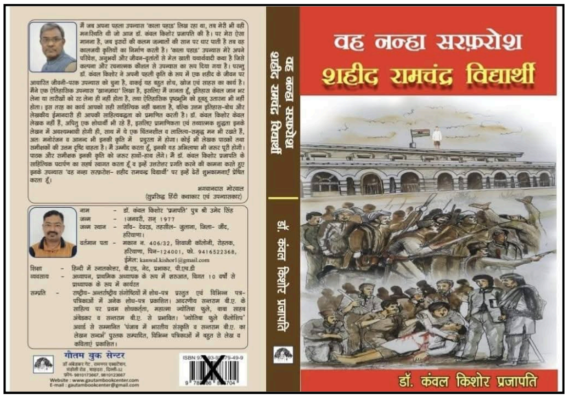

लेखक: डॉ. कंवल किशोर प्रजापति
पुस्तक: “वह नन्हा सरफ़रोश शहीद रामचंद विद्यार्थी”
📖 मूल्य: 300/-
प्रकाशक: गौतम बुक सेंटर, दिल्ली

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में पूर्वी उत्तर प्रदेश के देवरिया जनपद के हथियागढ़ गाँव के रामचन्द्र विद्यार्थी की शहादत एक उपेक्षित पर गौरवपूर्ण अध्याय है। १९२९ में जन्मे रामचन्द्र के परिवार में देशभक्ति की भावना गहरी थी। उनके दादा और पिता दोनों ही असहयोग आंदोलन से जुड़े थे। १९४२ में 'भारत छोड़ो आंदोलन' की लहर जब देवरिया पहुँची, तो तेरह वर्षीय रामचन्द्र भी उसमें कूद पड़े। १४ अगस्त १९४२ को उनके विद्यालय के छात्रों का एक जुलूस देवरिया कलेक्ट्रेट पहुँचा। पुलिस की लाठीचार्ज से जुलूस तितर-बितर हो गया, पर रामचन्द्र बाद में फिर से कलेक्ट्रेट के सामने पहुँच गए। वहाँ लहराता अंग्रेज़ी झंडा देखकर उन्होंने उसे उतारकर तिरंगा फहरा दिया। इससे क्रोधित पुलिस ने उन्हें गोलियों से भून दिया। घायल रामचन्द्र को तुरंत इलाज के लिए ले जाया गया, लेकिन किसी ने भी उनका इलाज करने से इनकार कर दिया और देर शाम तक वे शहीद हो गए।

उनकी शहादत के बाद अंग्रेज़ी हुकूमत ने उनके परिवार पर भीषण दमन ढाया। उनके पिता के घर को जला दिया गया और परिवार को वर्षों तक भटकना पड़ा। आज़ादी के बाद भी शहीद के परिवार को उचित सम्मान या सहायता नहीं मिली, जो स्वतंत्रता संग्राम के innumerable गुमनाम नायकों और उनके त्याग के प्रति हमारी collective उपेक्षा का एक दुखद उदाहरण है। रामचन्द्र विद्यार्थी जैसे बाल शहीद का बलिदान भारत के इतिहास में सदैव अमर रहेगा।
यह लेख शहीद रामचन्द्र विद्यार्थी की अमर गाथा को एक ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत करने का एक सराहनीय प्रयास है। यह न केवल एक बाल शहीद को श्रद्धांजलि है, बल्कि उन अनगिनत गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों और उनके परिवारों के प्रति हमारे दायित्वों की ओर भी इशारा करता है, जिन्होंने हमें यह आजादी दिलाई। इतिहास के विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और आम पाठकों के लिए यह एक महत्वपूर्ण पाठ है।

डॉ राजपाल
हिंदी विभाग
गुरु गोरखनाथ जी
राजकीय महाविद्यालय हिसार